RNI No. UPHIN/2010/35514 **ISSN-0976-349X**

अंक–20 दिसम्बर–2021

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित

इतिहास दृष्टि

संपादक

सैयद नजमुल रज़ा रिज़वी

संपर्क

228-आर, पूरबी बशारतपुर
निकट एच.एन. सिंह क्रॉसिंग
गोरखपुर-273004

17. आवां : युगीन संघर्षों का यथार्थ 83

- अंकिता त्रिपाठी

18- कीमियागरी के यथार्थ का जादू 88

- मणि रंजन राय

19. आत्मकथा की विकास यात्रा (अन्या से अनन्या विशेष संदर्भ में) 92

- रोशन राय

20- हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श 96

- डॉ० प्रीति डोभाल

21. इक्कीसवीं सदी के स्त्री उपन्यासों में शैली विधान 100

- चन्दन शुक्ला

22. लोक प्रचलित बुन्देली कहावतें एवं मुहावरे 108

- डॉ. प्राची सिंह

23. प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित सेना अस्त्र शस्त्र एवं आयुध प्रतीक : एक अध्ययन 114

- मनीषा

✶

प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित सेना अस्त्र शस्त्र एवं आयुध प्रतीक : एक अध्ययन

मनीषा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर, हरियाणा

प्राचीन भारतीय इतिहास में सेना का अस्तित्व प्राचीन काल से ही ज्ञात है। सैन्य व्यवस्था को प्रशासनिक संगठन का प्रमुख भाग माना जाता है। 'सप्तांग सिद्धान्त' के अन्तर्गत इसे राज्य का छठवाँ अंग बताया गया है। वैदिक साहित्य[1] में पैदल व रथ सेना का उल्लेख प्राप्त होता है। महाभारत[2], जैन[3] व बौद्ध[4] ग्रन्थों में पैदल, अश्व, रथ एवं हस्ति सेना के रूप में चतुरंगिणी सेना का उल्लेख किया गया है। इन साहित्यिक स्त्रोतों के अतिरिक्त खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख[5] व रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में भी चतुरंगिणी सेना का उल्लेख किया गया है।[6]

हयं – गज–नर–रध बहुलं दंड पठापयति।
तुरग–गज–रथ–चयर्यासि–चर्म–नियुद्वाद्याति।।

हाथीगुम्फा लेख–पंक्ति–सं0 4

इन अभिलेखीय स्त्रोतों के अतिरिक्त साँची स्तूप में अनेक स्थलों पर सेना के इन चारों अंगों का अंकन किया गया है। प्राचीन मुद्राओं के क्रम में हिन्द–यवन, शक–पह्लव, कुषाण, परवर्ती कुषाण, गुप्त, चहमान आदि शासकों की मुद्रा पर इन अंकनों के साथ ही साथ सैन्य वेशभूषा और उनके द्वारा युद्ध में प्रयोग किये जाने वाले अस्त्र–शस्त्र पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। जिसका अध्ययन मेरे द्वारा किया गया उसका विवरण निम्न है।

अश्व सेना :– भारत में विदेशी जातियों के आक्रमण एवं सत्ता स्थापना में अश्वरोही सेना का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन विदेशी व भारतीय शासकों की मुद्राओं पर प्राप्त होने वाले अश्व व अश्वारूढ़ राजा के अंकन से तत्कालीन समय में अश्व सेना के स्वरूप पर समुचित प्रकाश पड़ता है। विदेशी शासकों के आगमन से पूर्व महाकाव्य काल में अश्व सेना का वर्णन किया गया है। जो स्वतंत्र रूप से युद्ध भूमि में शत्रु की सेना पर आक्रमण करता था।[7] मेगास्थनीज तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्य काल की अश्व सेना पर प्रकाश पड़ता है। मुद्राओं में हिन्द–यवन शासक 'हरमेयस कैलियोप', शक–शासक 'वोनोनीज–स्पलहोर', 'वोनोनीज–स्पलगदम्', 'स्पलरिस–स्पलगदम्', 'स्पलरिस–एजेज–I', 'एजेज–I– एजिलाइजेज', 'एजिलाइजेज–एजेज–II', 'एजेज– I–अस्पवर्मा', पह्लव शासक 'गोण्डोफर्नीज–अस्पवर्मा', 'गोण्डोफर्नीज–सस', सातवाहन शासक 'सातकर्णि–नागनिका', मथुरा शासक 'हगान–हगामश', 'चहमान शासक पृथ्वीराज– III – मुहम्मद–बिन–साम की मुद्रा में अश्वारूढ़, अश्वारोही तथा मात्र अश्व का अंकन प्राप्त होता है। शक शासकों के काल से ही घोड़े के पीठ पर कसे हुए जीन का अंकन दिखलाई पड़ता है। साँची स्तूप में भी 'जीन एवं रकाब' का एक साथ प्रयोग होने का प्रमाण प्राप्त होता है। शासकों को विभिन्न प्रकार के अस्त्र–शस्त्र लिए घोड़े पर चित्रित किया गया है।

चित्र–1

गज :– चतुरंगिणी सेना में गज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वैदिक काल में इसका उल्लेख तो प्राप्त नहीं होता परन्तु मौर्य काल तक आते–आते हस्ति सेना अपने विकसित स्वरूप में दिखाई पड़ती है। हिन्द–यवन शासक एण्टियालकिड्स–लिसियास[8] की मुद्रा पर हस्ति का अंकन हेराक्लिज को भाला लिये कभी खड़ी आकृति के रूप में दर्शाया गया है। इस मुद्रा पर हस्ति का अंकन इन शासकों के सेनाओं में हस्ति के प्रयोग की पुष्टि करता है। यद्यपि पूर्ण रूप से यह कहना कठिन है कि इन मुद्रा पर प्रदर्शित हस्ति युद्ध में प्रयुक्त होने वाले हाथी के रूप में थे अथवा ये अंकन धार्मिक अभिप्रायों से प्रभावित थे? अजन्ता चित्रकला[9] तथा गुप्तकालीन साहित्य[10] में भी हस्ति सेना के साक्ष्य प्राप्त होते है। इसके अलावा प्राचीन भारतीय सामान्य मुद्राओं पर गज को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है। मौर्य काल के पश्चात् हस्ति सेना के विकास में कमी आयी। इसका सम्भवतः एक महत्वपूर्ण कारण सिकन्दर एवं पोरस के युद्ध का अनुभव रहा जिसमें हस्ति सेना के पीछे भागने तथा अपने ही सेना को हानि पहुँचाने की जानकारी प्राप्त होती है। विदेशियों द्वारा प्रयोग में लाये गये अश्व शक्ति ने भारतीय शासकों को बहुत प्रभावित किया और गज सेना के स्थान पर अश्व सेना के प्रयोग पर बल दिया। इसके बावजूद हस्ति को सेना के अंग के रूप में नकारा नहीं जा सकता है।

पदाति सेना :–

भारत में प्राचीन काल से ही पैदल सैनिक को सेना के प्रमुख अंग के रूप में जाना जाता है। साहित्यिक तथा अभिलेखिक साक्ष्यों में पैदल सेना के विकासक्रम को देखा जा सकता है।[11] गुप्त शासक कुमारगुप्त की सामान्य अप्रतिध प्रकार की मुद्रा[12] में सैन्य वेशभूषा में सुसज्जित पुरुष की आकृति है।

चित्र–2

चतुरंगिणी सेना के दोनों रूपों का अंकन तो मुद्राओं से ज्ञात होता है, लेकिन रथ सेना का अंकन अभी तक किसी मुद्रा से प्राप्त नहीं होता है। जिससे हमें रथ सेना की जानकारी मुद्राओं के आधार पर नहीं हो पाती है। मुद्राओं पर प्राप्त होने वाले इन सैन्य अंगों के साथ ही साथ सैनिकों की वेश–भूषा पर भी काफी प्रकाश डाला जा सकता है। जिसमें हिन्द, यवन, शक–पह्लव, कुषाण, कबायली एवं किदार कुषाण की मुद्राओं पर अंकित अश्वारोहियों तथा स्थानक राजा को यूनानी वस्त्र के साथ–साथ विशेष प्रकार का हेलमेट धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। इनके वस्त्रों को देखने से यह विदित होता है कि इनके कोट अत्यधिक भारी तथा गद्देदार ऊनी कपड़ों के बने हुएं थे।

ये हड्डी तथा लोहे से युक्त थे। इन शासकों द्वारा पैर की रक्षा की दृष्टि से जूतों को धारण किया जाता था व आगे कवच पहने प्रदर्शित है। इनके अंकनो से यह तो स्पष्ट है कि शासक या

सैनिक वर्ग सिर से पाँव तक सैन्य वेशभूषा से सुसज्जित थे जो युद्ध में सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

अस्त्र–शस्त्र :–

हिन्द–यवन, शक–पह्लव, कुषाण, परवर्ती कुषाण (गद्हर–किदार) (गद्हर–समुद्र) – मुद्रालिखित, शक–शिलादास, शक–मुद्रा, शक–बचरना, शक–पासना, गुप्त, यशस्कर एवं चाहमान शासकों की संयुक्त मुद्रा पर राजा एवं देवी–देवताओं को विविध प्रकार के अस्त्र–शस्त्र धारण किए प्रदर्शित किया गया है जो समसामयिक काल में उनके विविध प्रयोगों का अध्ययन कराते है। आयुध वस्तुतः युद्ध से सम्बन्धित है (आयुध्यते अनेन। आङ्+युध+क) अर्थात् जिसमें 'अयोधन' का कार्य होता है। इसके अन्तर्गत गदा, त्रिशूल, चक्र, वज्र, शूल, खड्ग, धुनष, बाण इत्यादि जैसे संहारक अस्त्र आते है। वैदिक ग्रन्थों में भी आयुध के अन्तर्गत क्षत्रियों के युद्ध उपकरणों (धनुष–बाण, वज्र, कवच) का ही उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद[13] का 'युद्ध–सुक्त' इस दृष्टिकोण की स्पष्ट पुष्टि करता है। वेदों में 'धुनष–बाण' को ही सर्वप्रथम आयुध कहा गया है। 'धनुर्वेद' के अनुसार आयुधों में मुख्यतः अस्त्र और शस्त्र दो विभाजन है, स्वचालित यन्त्रों को (चक्रादि) अस्त्र और हाथ से चलाये जाने वाले आयुध को शस्त्र कहा जाता था। बाल्यकाल से ही शासकों द्वारा इन आयुधों का अभ्यास किया जाता था। विदेशी तथा स्वदेशी सभी शासकों की संयुक्त मुद्रा पर किसी न किसी रूप में अस्त्र–शस्त्र का अंकन किया गया है। जिनमें समसामयिक काल के युद्ध कौशल का पता चलता है कि कैसे शासकों द्वारा विविध आयुधों का प्रयोग शासनार्गत रह कर किया जाता था? इन अंकनों का विवरण निम्न है–

भाला :–

भाला को बल्लम, बरछा इत्यादि नामों से जाना जाता है। सामान्य रूप से यह लकड़ी के डंडे से निर्मित एक अस्त्र के रूप में जाना गया है। जिसके ऊपरी भाग पर धातु की नोंक लगीं रहती थी, जो अधिकांश रूप से लोहे के धातु की बनाई जाती थी। साहित्य में इस आयुध को विविध नामों से जाना जाता है। जिसमें 'भल्ल', 'शक्ति'[14] आदि विविध नाम वर्णित है। प्राचीन मुद्राओं के क्रम में 'हरमेयस–कैलियोप', वोनोनीज–स्पलहोर, वोनोनीज– स्पलगदम्, स्पलरिस–स्पलगदम्, 'स्पलरिस–एजेज–I, एजेज–I–एजिलाइजेज, एजिलाइजेज –एजेज–II, एजेज–II, इन्द्रवर्मा, एजेज–II अस्पवर्मा, गोण्डोफर्नीज–अस्पवर्मा, गद्हर–किदार, गद्हर–समुद्र, शक–साया, शक–सीता, शक–सना, शिलादास– भद्रा, शिलादास–बचरना, शिलादास–पासना की मुद्रा में शासकों को भाला लिए प्रदर्शित किया गया है। इनमें कुछ शासकों की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर पल्लस जो यूनानी देवता है उनको भी भाला लिए प्रदर्शित किया गया है। शासकों द्वारा भाले का प्रयोग अश्वारूढ़ होकर स्वतंत्र रूप से किया जाता था। भाले के प्रयोग के साक्ष्य साहित्य एवं मुद्राओं के अतिरिक्त पुरातात्विक स्थल जखेड़ा, अतंरजीखेड़ा, कौशाम्बी, मथुरा[15] आदि स्थलों के उत्खनन से भी प्राप्त होता है।

धनुष :–

धनुष–बाण प्राचीन काल से ही सर्वप्रचलित आयुध रहे है। वैदिक काल में जहाँ भी आयुध का प्रसंग आया है, उनमें धनुष–बाण को सर्वप्रथम आयुध के रूप में माना गया।[16] महाकाव्य काल में भी धनुष–बाण का प्रमुख स्थान रहा। इस काल तक धनुर्विद्या का पूर्णतः विकास हो चुका था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में धनुष के तीन प्रकार 'कार्मुक', 'कोदण्ड' तथा 'द्रूण' का वर्णन किया गया है।[17] मुद्राओं पर सामान्य रूप से दो प्रकार के धनुष का अंकन दिखाई पड़ता है– 1. साधारण धनुष, 2. संयुक्त धनुष।

साधारण धनुष लकड़ी के एक मोड़ से युक्त अर्धवृत्त के आकार का होता था तथा संयुक्त धनुष दो अर्धवृत्त को अलग से लकड़ी या धातु के टुकड़ों को जोड़कर निर्मित किया जाता था। कभी–कभी इस धनुष को चारो ओर चर्म से भी लपेटा जाता था। प्राचीन मुद्राओं के क्रम में अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो 1, स्पलरिस–एजेज[18] की मुद्रा में पृष्ठभाग पर स्वतंत्र रूप से धनुष एवं बाण का अंकन किया गया है। हरमेयस–कैलियोप, एजेज–अस्पवर्मा[19] की मुद्रा पर धनुष लिए राजा को प्रदर्शित किया गया है। गोनडोफर्निज–सस की मुद्रा के पृष्ठभाग पर किसी देवता को धनुष लिए दिखाया गया है। यूनानी लेखक 'एरियन' के अनुसार भारतीय पैदल सैनिक अपने लम्बाई के ही

बराबर धनुष धारण करते थे।[20] अग्निपुराण[21] में उत्तम धनुष की लम्बाई 4 हाथ, मध्य श्रेणी की साढ़े तीन हाथ व निम्न श्रेणी की लम्बाई तीन हाथ बतायी गयी है। धनुष के लिए प्रायः लोहे, सींग और लकड़ी का प्रयोग व धनुष की डोरी के लिए 'वश्क', भंग (पटसन) एवं 'चमड़े' का प्रयोग किया जाता था। प्राचीन भारतीय शासकों की सामान्य मुद्रा में अन्य आयुध की अपेक्षा धनुष–बाण का अंकन अधिक हुआ है। अतः यह आयुध वीर योद्धाओं के अतिरिक्त सामानय जन–जीवन में भी प्रचलित था।

बाण :–

धनुष के साथ प्रयोग में लिए जाने वाले महत्वपूर्ण अस्त्र के रूप में यह जाना जाता है। शास्त्रीय रूप में जहाँ धनुष को स्त्री के रूप में जाना गया है वही बाण को पुरुष रूप में दिखाने का विधान है। 'स्ट्रेटो– I, स्ट्रेटो– II' की मुद्रा में अपोलो (यूनानी देवता) को दोनों हाथ में धनुष एवं बाण लिए दर्शाया गया है। वही स्पलरिस–एजेज की मुद्रा में धनुष के साथ बाण का अंकन किया गया है। इन मुद्राओं से प्राप्त होने वाले अंकनों में बाण का अग्रभाग त्रिभुजाकार एवं नुकीला दर्शाया गया है।

इसका नीचे का भाग पंखयुक्त है। बाण के इस बनावट के कारण यह हवा को चीरते हुए तेज गति से आगे बढ़ता था। बाण का अग्रभाग सम्भवतः लोहे, कांसे, तांबे एवं सींग द्वारा निर्मित होता था। पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त बाणाग्र लोहे, हड्डी एवं हाथी दाँत से निर्मित है। बाण का मध्य भाग सम्भवतः नरकुल, बाँस, सरकण्डे या विशिष्ट प्रकार की लकड़ी अथवा लोहे का बना होता था। मथुरा, वैशाली, कौशाम्बी, अतरंजीखेड़ा के उत्खनन से लोहे के बाणाग्र व सोनपुर, तुमैन, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र से हड्डी एवं हाथी दाँत से भी निर्मित बाणाग्र प्राप्त हुए है। साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्त्रोतों से यही स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समय में सेना में सैनिकों द्वारा लोहे, लकड़ी के अतिरिक्त हड्डी तथा हाथी दाँत के भी बाण का प्रयोग किया जाता था।

तरकश :–

बाण को रखने के लिए तरकश का प्रयोग किया जाता था। ये तरकश चौड़े मुह वाले शंक्वाकार एवं लम्बे होते थे। हॉपकिन्स[22] के अनुसार तरकश योद्धा के पीठ पर दायें भाग में बांधे जाते थे जिसमें लगभग 10 से 20 बाण रखे जाते थे। अगाथाक्लिया–स्ट्रेटो की संयुक्त मुद्रा में तरकश का अंकन धनुष के साथ किया गया है। बाण का अंकन तो स्पष्ट नहीं है लेकिन तरकश को देखने से यह विदित होता है कि इसका अंकन बाणों को रखने के लिए ही किया गया होगा।

तलवार :–

यह धातु निर्मित हाथ से चलाये जाने में प्रयुक्त होने वाला महत्वपूर्ण शस्त्र है। इसे 'कृपाण' अथवा 'असि' भी कहते है। ऋग्वेद में लौहमय खड्ग (कृपाण) का उल्लेख मिलता है।[23] महाकाव्यों में इसे 'निस्त्रिश', 'खड्ग', 'असि'[24] कहा गया है।

वोनोनीज–स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम् की मुद्रा में राजा का बायाँ हाथ तलवार की मूंठ पर रखे प्रदर्शित किया गया है। खड्ग की मूंठ को गैण्डे, भैसे की सींग, हाथी दाँत, लकड़ी तथा बांस से बनाया जाता था। वृहत्संहिता में 50 अंगुल लम्बा खड्ग उत्तम कोटि का माना गया है और सबसे छोटा खड्ग 25 अंगुल लम्बा बताया गया है। यह तलवार मुख्य रूप से धारयुक्त लोहे की धातु से बनाया जाता था। अग्निपुराण में खड्ग का यथेष्ट विवरण प्राप्त होता है। मुद्राओं पर दर्शाये गये तलवारों के अंकन से यह ज्ञात होता है कि प्रायः इन्हें बेल्ट या मेखला के सहारे कमर के पास लटकाया जाता था। नागार्जुनीकोण्डा[25] तथा प्राचीन स्थलों के उत्खनन से भी लोहे के तलवार के प्रयोग की पुष्ठि होती है।[26]

ढाल :–

यह एक प्रकार का रक्षात्मक आयुध है। तलवार व भाले के साथ ढाल का साहचर्य प्रारम्भ से ही देखा गया है। ऋग्वेद[27] के युद्ध सुक्त में सुरक्षात्मक आवरणों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इसका निर्माण काष्ठ धातु अथवा चर्म द्वारा होता था। पशुओं की खाल से बने ढाल को शिल्पशास्त्र में 'चर्म' कहा गया है। वोनोनीज–स्पलहोर, एजेज–एजिलाइजेज एजिलाइजेज–एजेज II, एजेज II, इन्द्रवर्मा की मुद्रा में पल्लस (यूनानी देवी) को अन्य आयुध के साथ ही ढाल लिए प्रदशित किया गया है। मुद्राओं पर ढाल का अंकन मुख्य रूप से वर्तुलाकार ही दिखाई पड़ता है। लेकिन मूर्तिकला में

सामान्यतया वर्तुलाकार के अलावा कभी–कभी आयताकार, गोलाकार, वृत्ताकार और त्रिभुजाकार रूप भी दिखाई पड़ता है।

वज्र :–

भारतीय परम्परा में 'वज्र' को इन्द्र का विशिष्ट आयुध माना गया है, तथा ग्रीक परम्परा में यूनानी देवता जीयस एवं देवी पल्लस के आयुध के रूप में इसे जाना जाता है। यूक्रेटाइडिज, अगाथाक्लिज की स्मारक मुद्रा, वोनोनीज–स्पलहोर, वोनोनीज–स्पलगदम्, स्पलरिस–एजेज की संयुक्त मुद्रा पर जीयस को वज्र के साथ अंकित किया गया है। इसके अलावा वज्र लिए पल्लस का अंकन अगाथाक्लिया– स्ट्रेटो I, स्ट्रेटो I, स्ट्रेटो II, एजेज I, एजिलाइजेज, एजिलाइजेज, एजेज II, मुद्रा पर प्राप्त होता है। आकार एवं संरचना की दृष्टि से वज्र के दोनों सिरे सामान्यतया त्रिशूल सम आकृति के होते है जो मध्य में हाथ में पकड़ने योग्य मुठिका से जुड़े होते है। भगवतपुराण[27] के अनुसार इन्द्र ने दधीचि के शरीर की अस्थि से निर्मित वज्र का प्रयोग किया था। व्रज के प्रयोग के सन्दर्भ में प्राप्त विवरणों के आधार पर इसे एक आग्रेयास्त्र माना जा सकता है। इसके अध्ययन से यह विदित होता है कि सम्भवतः इसमें हड्डियों से प्राप्त 'फास्फोरस' के द्वारा अग्नि या विद्युत शक्ति का संचार किया गया होगा।

गदा :–

प्राचीन काल से ही भारत में गदा युद्ध में प्रयुक्त होने वाला प्रमुख शस्त्र के रूप में जाना जाता है। थोड़े बहुत अंतर के रूप में इसके कई नाम मिलते हैं जैसे 'मुसल', 'मुदर', 'महागदा', 'परिध' यष्टि आदि। सिन्धु घाटी से प्राप्त अवशेषों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि इसका प्रयोग अति प्राचीन काल से ही होता रहा है इसमें मोहनजोदड़ो हड़प्पा से पत्थर तथा ताम्र निर्मित गदा प्राप्त हुए है।[28] प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर भी इसका अंकन प्रचुरता से हुआ है। अर्थशास्त्र[29] में यष्टि को नोंक से युक्त दण्ड एवं मूसल को लकड़ी से बने बेलन के आकार का बताया गया है जो 20 अंगुल लम्बा तथा चार अंगुल चौड़ा था। मूर्तिकला में गदा के सर्वाधिक विविधतापूर्ण उदाहरण विष्णु मूर्तियों के साथ देखने में मिलता है जिन्हें आकार, प्रकार संरचना और अलंकरण की दृष्टि से विभिन्न वर्गोकृत किया जा सकता है।[30]

अगाथाक्लिज, अगाथाक्लिया – स्ट्रेटो I, वोनोनीज – स्पलहोर, स्पलरिस –स्पलगदम् – एजिलाइजेज एजेज II, हरमेयस–कुजुल कैडफिसेस की संयुक्त मुद्राओं पर गदा लिए हेराक्लिज को दर्शाया गया है। इन मुद्राओं पर अंकित गदा से समसामयिक प्रयोग में लाए गये बेलनाकार मूसल के रूप में आयुध की जानकारी भी मिलती है।

अंकुश :–

अंकुश आकार में काष्ठ निर्मित या धातु निर्मित गदाकार दण्ड के समान होता है। जिसके शीर्ष के मध्य से एक धातु का नुकीला कांटा या हुक निकला होता है। मुख्य रूप से यह हस्ति संचालन के प्रयोग में आने वाला आयुध है जो गज के रूप में बुद्धि पर नियंत्रण या अंकुश का सूचक है। स्पलरिस–एजेज की संयुक्त मुद्रा का राजा को अंकुश लिए अंकित किया गया है परन्तु इस आकृति में शासक को गजारूढ़ न होकर अश्वारूढ़ दर्शाया गया है। सम्भवतः इस अंकुश का प्रयोग गजारोहियों के अलावा अश्वारोहियों द्वारा भी युद्ध में अत्यन्त आपात काल में किया जाता रहा होगा।

राजदण्ड :–

यह साधारण दण्ड के सदृश्य दिखने वाला एक आयुध है। अगाथाक्लिज, बोनोनीज–स्पलहोर, स्पलरिस–एजेज की संयुक्त मुद्राओं में जीयस को राजदण्ड धारण किए प्रदर्शित किया गया है। यह दण्ड 'यम' के विशिष्ट आयुध के रूप में जाना जाता है। सम्भवतः देवता व राजा के साथ राजदण्ड दण्ड का अंकन दण्डविधान, शासकीय दण्ड के सूचक रूप अंकित किया गया होगा।

कोड़ा :–

यह रस्सी की भाँति दिखाई पड़ने वाला ऐसा आयुध है। जिसे चाबुक नाम से भी जाना जाता है। मुख्य रूप से यह चर्म व जूट से बना होता था। स्पलरिस–एजेज, एजेज–अस्पवर्मा की संयुक्त मुद्रा पर शासन को कोड़ा लिए दर्शाया गया है। हरमेयस–कुजुल कैडफिसेस की मुद्रा में भी नीके

को चाबुक धारण किये अंकित किया गया है। यह एक प्रकार का दण्ड स्वरूप आयुध था जो किसी अपराध किये व्यक्ति पर दण्ड स्वरूप प्रयोग किया जाता था। शासकों के साथ इसका अंकन सम्भवतः युद्ध स्थल पर शत्रु सेना को मारने हेतु भी इसका उपयोग किया जाता था।

पाश :–

पाश का शाब्दिक अर्थ फन्दा होता है जो सामान्तया रस्सी का बना होता है। पाश को वरुण का प्रमुख आयुध प्रतीक माना गया है। अग्निपुराण[31] के अनुसार यह दस हाथ लम्बी रस्सी का बना होता है। जिसके एक सिरे पर फन्दा बना रहता है। और दूसरा सिरा प्रयोग करने वाले के हाथ में रहता था। परवर्ती कुषाण शासकों की मुद्रा में आर्दोक्षों एवं शिव को तथा गुप्त शासक चन्द्रगुप्त– I व कुमारदेवी, की संयुक्त मुद्रा में देवी को पाश लिए दर्शाया गया है। मुद्राओं पर इसका अंकन लम्बी गाँठयुक्त रस्सी के समान है, जिसके मध्य में एक लम्बा छल्ला होता था। यह पटसन, मुंज या पशु चर्म से निर्मित था। सम्भवतः इसका प्रयोग सैनिको को बन्दी बनाने के लिए किया जाता था। देवी के साथ पाश का अंकन उनकी आकर्षण शक्ति के प्रतीक के रूप में भी माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. बनर्जी, पी0एन0, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन एन्शियेन्ट इण्डिया, पृ0 198
2. महाभारत, आदिपर्व, 69, 3–4
3. उत्तराध्ययन सूत्र, 22:12
4. दीघनिकाय, 3–200; मज्झिम निकाय, 3–173, 175, 176
5. एपिग्राफिका इण्डिया, जिल्द 45, पृ0 08
6. हाथीगुम्फा लेख–पक्ति सं0 4/जूनागढ़ लेख, पंक्ति सं0 13 (सरकार, डी0सी0, सलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स, जिल्द–1, पृ0 214) सलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स, जिल्द–1, पृ0 214
7. सिंह, एस0डी0; एन्शियेन्ट इण्डियन वार फेयर विद स्पेशल रिपरेन्स टू द वैदिक पीरियड, पृ0 53–64
8. नारायन, ए0के0, ग्रीक भारतीय अथवा यवन, पृ0 66
9. याजदानी, अजन्ता, फलक 37, बी0, पृ0 61
10. सिन्हा, बी0पी0, रीडिंग्स इन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, पृ0 67
11. रामायण, बालकाण्ड, 63:3; महाभारत, आदिपर्व, सर्ग 69.4, एपिग्राफिका इण्डिया, जिल्द 2, 11; जिल्द 7, पृ0 22
12. अल्तेकर, अनन्त सदाशिव; गुप्त मुद्राएँ, पृ0 145–146
13. राय, राजकुमार, वैदिक इण्डेक्स, वाराणसी, 1962, पृ0 68–69
14. रघुवंश 12.77
15. आई0ए0आर0, 1955–57, पृ0 54–55, प्लेट 56–47
16. ऋग्वेद 1/39/12; 61/13
17. अर्थशास्त्र 2/18/9
18. ब्रिटिश म्यूजियम कैटलॉग, प्लेट XXII, 3–4
19. पवार, विकास, डवायंट क्वायंस इशू, पृ0 52
20. मजूमदार, आर0सी0, क्लासिकल एकाउन्टस ऑफ इण्डिया, पृ0 230
21. अग्निपुराण, 100.37
22. जे0ए0ओ0एस0, खण्ड 13
23. ऋग्वेद, 6/47/10; 10/22/20
24. रामायण, युद्ध काण्ड, 59/12/22; महाभारत, कर्णपर्व 21/11
25. लांग हर्स्ट, द बुद्धिस्ट एण्टीक्यूटीज ऑफ नागार्जुनिकोण्डा, एम0ए0एस0आई0, जिल्द 54, 1938, फलक 22ब, 38ब
26. मार्शल, तक्षशिला, पृ0 545
27. भगवतपुराण, 86/10/11–13
28. मार्शल, जॉन; मोहनजोदड़ो एण्ड दि इण्डस सिविलाइजेशन, पृ0 1–36
29. मैक्रिन्डल, इण्डिया एण्ड इट्स इनवेजन बाई एलेक्जेण्डर, पृ0 234–266
30. गुप्ता, रूमी; देवी देवताओं के अस्त्र–शस्त्र, पृ0 66–69
31. अग्निपुराण, 222/5